



NEERAJ®

प्रेमचंद

B.H.D.E. - 143

**Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers**

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

*By: Jyoti Babbar
&
Sanjay Jain*



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Published by:



NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

© Copyright Reserved with the Publishers only.

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

Disclaimer/T&C

1. For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.
2. This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.
3. These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.
4. In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.
5. The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.
6. Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.
7. The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.
8. All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.
9. All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.

Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the “Special Discount Schemes” being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay “Cash on Delivery” (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

Content

प्रेमचंद

Question Paper—June-2023 (Solved)	1-3
Question Paper—December-2022 (Solved)	1-3
Question Paper Exam Held in July 2022 (Solved)	1-2
Sample Question Paper-1 (Solved)	1-2
Sample Question Paper-2 (Solved)	1-2

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
1.	प्रेमचंद का परिचय और साहित्य	1
2.	‘सेवासदन’ का कथानक और अंतर्वस्तु	15
3.	‘सेवासदन’ का परिवेश और संरचना-शिल्प	29
4.	‘सेवासदन’ के चरित्र	35
5.	‘कर्बला’ की अंतर्वस्तु और मूल्यांकन	46
6.	‘साहित्य का उद्देश्य’ का वाचन और व्याख्या	52
7.	‘साहित्य का उद्देश्य’ का विश्लेषण एवं मूल्यांकन	65
8.	‘पूस की रात’ कहानी का वाचन एवं व्याख्या	73
9.	‘पूस की रात’ कहानी की कथावस्तु और विश्लेषण	81
10.	‘शतरंज के खिलाड़ी’ कहानी का वाचन और व्याख्या	93
11.	‘शतरंज के खिलाड़ी’ कहानी का विश्लेषण एवं मूल्यांकन	102

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
12.	'पंच परमेश्वर' कहानी का वाचन और व्याख्या	110
13.	'पंच परमेश्वर' कहानी का विश्लेषण और मूल्यांकन	120
14.	'ईदगाह' कहानी का वाचन और व्याख्या	126
15.	'ईदगाह' कहानी का विश्लेषण एवं मूल्यांकन	138
16.	'दो बैलों की कथा' कहानी का वाचन	144
17.	'दो बैलों की कथा' कहानी का विश्लेषण एवं मूल्यांकन	154



**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

प्रेमचंद

B.H.D.E.-143

समय : 3 घण्टे |

| अधिकतम अंक : 100

नोट : प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं तीन की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए—

(क) उमानाथ बहन को अपने घर लाने पर मन में बहुत पछताते। वे अपनी स्त्री को प्रसन्न रखने के लिए ऊपरी मन से उसकी हाँ में हाँ मिला दिया करते। गंगाजली को साफ कपड़े पहनने का क्या अधिकार है? शान्ता का पालन पहले चाहे कितने ही लाड़-प्यार से हुआ हो, अब उसे उमानाथ की लड़कियों से बराबरी करने का क्या अधिकार है? उमानाथ स्त्री की इन द्वेषपूर्ण बातों को सुनते और उनका अनुमोदन करते। गंगाजली को जब क्रोध आता, तो वह अपने भाई ही पर उतारती।

उत्तर—संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचंद रचित उपन्यास 'सेवासदन' से उद्धृत है। उमानाथ कृष्णचंद्र के साले थे। वे अपनी बहन गंगाजली को अपने घर ले लाते हैं। किंतु उमानाथ की पत्नी को गंगाजली का आना अच्छा नहीं लगता। वह उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करती। अपनी बहन के साथ अपनी पत्नी का व्यवहार देखकर उमानाथ पछताते हैं। इसी स्थिति का यहां वर्णन है।

व्याख्या—उमानाथ अपनी बहन को घर लाकर पछताते हैं। वे पत्नी को खुश रखने के लिए उसकी हाँ में हाँ मिलाते, किंतु मन ही मन बहन के लिए चिंता करते। पत्नी कहती कि गंगाजली को साफ कपड़े पहनने का अधिकार नहीं है, क्योंकि वह तो विधवा है। उसकी बेटे शांता चाहे वह कितने लाड़ में पली हो, किंतु अब उसे उमानाथ की लड़कियों की बराबरी करने का अधिकार नहीं है। उमानाथ अपनी पत्नी की जली-कटी सुनने पर घर में शांति बनाए रखने के लिए उसकी बातों का समर्थन करते। दूसरी ओर गंगाजली को भाभी की बातें सनुकर क्रोध आता, तो वह भी अपना क्रोध अपने भाई पर ही उतारती।

विशेष—1. व्यक्ति की स्थिति बदलने पर लोगों की मनोदृष्टि किस प्रकार बदल जाती है, उसका यथार्थ अंकन है।

2. पारिवारिक संबंधों में पनपती स्वार्थवृत्ति की अभिव्यक्ति है।
3. भाषा वर्णनात्मक एवं भावप्रवण है।

(ख) सुधार की जिस अवस्था में वह हो, उससे अच्छी अवस्था आने की प्रेरणा हर आदमी में मौजूद रहती है। हममें जो कमजोरियाँ हैं वह मर्ज की तरह हमसे चिमटी हुई हैं। जैसे

शारीरिक स्वास्थ्य एक प्राकृतिक बात है और रोग उसका उल्टा। उसी तरह नैतिक और मानसिक स्वास्थ्य भी प्राकृतिक बात है और हम मानसिक तथा नैतिक गिरावट से उसी तरह संतुष्ट नहीं रहते, जैसे कोई रोगी अपने रोग से संतुष्ट नहीं रहता।

उत्तर—संदर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेमचंद द्वारा प्रगतिशील लेखक मंच के अध्यक्षीय भाषण का अंश हैं। जिसका शीर्षक 'साहित्य का उद्देश्य' है। इन पंक्तियों में प्रेमचंद ने यह बताना चाहा है कि हर व्यक्ति जीवन और समाज में सुधार का भाव रखता है, किंतु अपनी कमजोरियों के कारण आगे नहीं बढ़ पाता और मानसिक एवं शारीरिक रूप से असंतुष्ट रहता है।

व्याख्या—प्रेमचंद का विचार है कि समाज का प्रत्येक चाहता है कि वर्तमान में जो सुधार हुए हैं अथवा हो रहे हैं, आगे उससे भी बेहतर सुधार होने चाहिए। यह प्रेरणा व्यक्ति को देश, समाज और परिवार के प्रति सजग रखती है। हमारी कमजोरियाँ हमारे व्यक्तित्व के लिए रोग की तरह चिपटकर उसे कमजोर करती हैं। शारीरिक स्वस्थ्य तो प्रकृति के अनुसार होता है, किंतु रोग हमारी कमजोरियों का परिणाम होता है। इसी प्रकार व्यक्ति मानसिक एवं नैतिक भाव जन्म से साथ लेकर आता है, किंतु हम मानसिक एवं नैतिक गिरावट व्यक्ति को उसी प्रकार असंतुष्ट बना देती है, जिस प्रकार रोगी अपने रोग से असंतुष्ट रहता है।

विशेष—1. जीवन में सुधार की प्रेरणा से आगे बढ़ने और मानसिक एवं नैतिक पतन के कारण व्यक्तित्व के कमजोर होने की प्रवृत्ति को उजागर किया है।

2. दार्शनिकता का भाव है।

(ग) घरवालों का तो कहना ही क्या मुहल्लेवाले, घर के नौकर-चाकर तक नित्य द्वेषपूर्ण टिप्पणियाँ किया करते थे—बड़ा मनहूस खेल है। घर को तबाह कर देता है। खुदा न करे, किसी को इसकी चाट पड़े, आदमी दीन-दुनिया किसी के काम का नहीं रहता, न घर का, न घाट का। बुरा रोग है। यहां तक कि मिरजा की बेगम साहिबा को इससे इतना द्वेष था कि अक्सर खोज-खोजकर पति को लताड़ती थीं। पर उन्हें इसका अवसर मुश्किल से मिलता था। वह सोती ही रहती थीं, तब तक उधर

बाजी बिछ जाती थी और रात को जब सो जाती थीं तब कहीं, मिरजाजी घर में आते थे।

उत्तर-संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचंद रचित कहानी 'शतरंज के खिलाड़ी' से लिया गया है। इन पंक्तियों में शतरंज के खेल के व्यक्ति, परिवार और समाज पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को उजागर किया गया है।

व्याख्या—शतरंज के खेल की लत पड़ने पर व्यक्ति और परिवार किस प्रकार बर्बादी की स्थिति में आ जाते हैं, जिससे इस खेल के प्रति नकारात्मक मानसिकता बन गई है। मीर और मिरजा दोनों सारा दिन शतरंज खेला करते थे, इस कारण घर के लोगों के साथ मुहल्ले वाले एवं नौकर-चाकर भी व्यंग्य किया करते थे। वे कहते थे कि यह खेल मनहूस है, जिसको इसका शौक लग जाता है, वह घर-परिवार एवं अपने सारे काम छोड़कर इसी में लगा रहता है। मिरजा की बेगम शतरंज के खेल से बहुत चिढ़ती थी, वह बात-बात में पति को लताड़ती थी, किंतु बेगम के सोते रहने पर मीर के घर बाजी जाती थी, जिस कारण मिरजा देर रात को घर लौटते थे और उनकी बेगम को उन्हें डाँटने का अवसर अधिक नहीं मिल पाता था।

विशेष-1. शौक जब लत बन जाए, तो दुष्प्रभाव व्यक्ति, परिवार एवं समाज सभी पर पड़ता है।

2. तत्कालीन सामाजिक एवं राजनैतिक पतन को दर्शाया है।

3. भाषा उर्दू बहुल है।

(घ) गाँव में एक समझू साहु थे, वह इक्का-गाड़ी हाँकते थे। गाँव के गुड़-घी लादकर मंडी ले जाते, मंडी से तेल, नमक भर लाते और गाँव में बेचते। इस बैल पर उनका मन लहराया। उन्होंने सोचा, यह बैल हाथ लगे तो दिनभर में बेखटके तीन खेप हों। आजकल तो एक ही खेप में लाले पड़े रहते हैं। बैल देखा, गाड़ी में दौड़ाया, बाल-भौरी की पहचान करायी, मोल-तोल किया और उसे लाकर द्वार पर बांध ही दिया। एक महीने में दाम चुकाने का वादा ठहरा। चौधरी को भी गरज थी ही, घाटे की परवा न की।

उत्तर-संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचंद की कहानी 'पंच परमेश्वर' से उद्धृत है। अलगू चौधरी का हष्ट-पुष्ट, स्वस्थ एवं फुर्तीला बैल देखकर समझू साहु का उस पर दिल आ गया। समझू साहु ने सोचा कि यदि यह बैल उसे मिल जाए, तो वह बाजार के तीन-चार चक्कर लगाकर खूब कमा लेगा। अलगू चौधरी को भी पैसे की जरूरत थी, इसलिए समझू साहु ने इसका लाभ उठाने की भी सोची।

व्याख्या—गाँव में समझू साहु इक्का-गाड़ी हाँकते थे। वे गाड़ी पर गुड़-घी लादकर मंडी ले जाते और मंडी से तेल-नमक लाकर गाँव में बेचते। अलगू चौधरी का बैल समझू साहु ने देखा कि इस स्वस्थ बैल से बाजार के कम से कम तीन चक्कर लगाए जा सकते हैं। अपने बैल से एक चक्कर लगाना भी मुश्किल हो जाता है। समझू

साहु ने बैल के परीक्षण के लिए उसे गाड़ी में दौड़ाया, उसके स्वास्थ्य का परीक्षण किया, फिर उसका मोल-भाव करके उसे खरीद लिया और एक महीने में दाम चुकाना तय हुआ। अलगू चौधरी भी बैल को बेचना चाहते थे, इसलिए अधिक सोच-विचार नहीं किया।

विशेष-1. भाषा वर्णनात्मक एवं दृश्यात्मक है।

2. व्यापार में लाभ-हानि सोचकर सौदा करने के कौशल को दिखाया है।

3. अपने लाभ के लिए दूसरे जीवों के कष्ट को ध्यान में रखने की प्रवृत्ति को भी उजागर किया है।

(ङ) दोनों मित्र जान हथेली पर लेकर लपके। साँड़ को भी संगठित शत्रुओं से लड़ने का तजुरबा न था। वह तो एक शत्रु से मल्लयुद्ध करने का आदी था। ज्यों ही हीरा पर झपटा, मोती ने पीछे से दौड़ाया। साँड़ उसकी तरफ मुड़ा, तो हीरा ने रगेदा। साँड़ चाहता था कि एक-एक करके दोनों को गिरा ले, पर ये दोनों भी उस्ताद थे, उसे वह अवसर न देते थे। एक बार साँड़ झल्लाकर हीरा का अंत कर देने के लिए चला कि मोती ने बगल से आकर उसके पेट में सींग भोंक दिया। साँड़ क्रोध में आकर पीछे फिरा तो हीरा ने दूसरे पहलू में सींग चुभा दिया।

उत्तर-संदर्भ—देखें अध्याय-16, पृष्ठ-151, 'व्याख्या 4'

प्रश्न 2. प्रेमचंद का जीवन परिचय दीजिए।

उत्तर-संदर्भ—देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'प्रेमचंद का जीवन परिचय'

प्रश्न 3. प्रेमचंद के वैचारिक गद्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—प्रेमचंद ने कथा-साहित्य के साथ-साथ नियमित रूप से प्रचुर मात्रा में वैचारिक गद्य का लेखन किया। उनका पहला लेख सन 1903 में उर्दू पत्रिका 'जमाना' में प्रकाशित हुआ। उनका अंतिम वैचारिक निबंध 'महाजनी सभ्यता' है, उनका लेखन पत्रकारिता के रूप में संपादकीय के रूप में पत्र साहित्य के रूप में छपा। उन्होंने समाज-सुधार से जुड़े हुए विभिन्न मुद्दों पर कई लेख लिखे। इससे हमें उस युग की सामाजिक कुरीतियों, समस्याओं और परिस्थितियों की जानकारी मिलती है। उन्हें जहाँ लगा वहाँ सरकारी कार्यों में असहमति प्रकट की उनका विरोध किया।

प्रेमचंद आरंभ में आर्य समाज से बहुत प्रभावित थे। वे अपने संपूर्ण लेखन में हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक रहे। उन पर सोवियत क्रांति का प्रेमचंद पर समाजवादी विचारधारा का भी प्रभाव पड़ा, न वो पूरी तरह से गाँधीवादी थे और न समाजवादी उनके जीवन की सबसे बड़ी आकांक्षा थी कि देश को स्वतंत्रता मिल जाए। वे साहित्य की उपयोगिता के समर्थक थे। वे परिवर्तन की आकांक्षा रखते हैं। इसी आकांक्षा के कारण उन्होंने जीवन और साहित्य में घृणा के महत्त्व पर प्रकाश डाला। वे चाहते थे कि हमारे लेखक मनुष्यों की सृष्टि करें। साहसी, ईमानदार, स्वतंत्र चेतना, मनुष्य, जान पर खेलने वाले जोखिम उठाने वाले मनुष्य ऊँचे आदर्शों वाले मनुष्य इसी की जरूरत है।

Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

प्रेमचंद

प्रेमचंद का परिचय और साहित्य

1

परिचय

प्रेमचंद को हिंदी और उर्दू के महानतम लेखकों में गिना जाता है। प्रेमचंद को हिंदी साहित्य का कथा-सम्राट कहा जाता है। उन्होंने 'सेवासदन', 'रंगभूमि', 'निर्मला', 'गोदान' आदि उपन्यासों की रचना की है। 'पंच परमेश्वर', 'दो बैलों की कथा', 'पूस की रात', 'कफन' आदि उनकी बहुचर्चित कहानियाँ हैं।

उन्होंने हिंदी में तीन नाटकों की रचना भी की है। उनकी कहानियों और उपन्यासों में कथ्य और शिल्प के स्तर पर व्यापक समानता मिली है। उन्होंने उपन्यासों में शोषित, पीड़ित जनता के दुःख दर्द सामाजिक समस्याओं को स्थान दिया अपने सृजन के मध्यम पड़ाव पर प्रेमचंद ने जिस कथा-साहित्य की रचना की, आलोचकों ने उसे आदर्शोन्मुख-यथार्थवादी रचनाएँ कहा। लेखन के अंतिम सोपान पर पहुँचते-पहुँचते प्रेमचंद का आदर्श से मोह भंग हो गया। यथार्थ ने वहाँ स्थान ले लिया। प्रेमचंद ने सामाजिक यथार्थ की उभारा है।

अध्याय का विहंगावलोकन

प्रेमचंद का जीवन परिचय

धनपतराय श्रीवास्तव (31 जुलाई 1880 से 8 अक्टूबर 1936), जो प्रेमचंद नाम से जाने जाते हैं, हिंदी और उर्दू के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार, कहानीकार एवं विचारक थे। उन्होंने 'सेवासदन', 'रंगभूमि', 'निर्मला', 'गबन', 'कर्मभूमि', 'गोदान' आदि लगभग डेढ़ दर्जन उपन्यास तथा 'कफन', 'पूस की रात', 'दो बैलों की कथा' आदि तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखीं।

इनका प्रारंभिक जीवन संघर्षमय रहा। वे सात वर्ष के थे, अतः माता का स्वर्गवास हो गया पंद्रह वर्ष की उम्र ने विमाता ने उनका विवाह उनसे बड़ी उम्र की लड़की से कर दिया। 16 वर्ष की आयु में उनके पिता का देहांत हो गया। पत्नी एवं विमाता से नहीं बनने के कारण इन्होंने घर छोड़ दिया।

साहित्य से बहुत की गहरा संबंध है, उन्होंने 16 साल की आयु से ही सौतेली माँ व्यवहार, बचपन की शादी, पिता का देहांत उनके अनुभव थे, सच्चाई उनके कथा साहित्य में झलक उठे। 13

वर्ष की उम्र में उन्होंने 'तिलिस्म-ए-होशरूबा' पढ़ लिया। 1906 में उन्होंने बाल विधवा शिवरानी देवी से विवाह किया जो जीवन भर उनके साथ रही। उनका पहला उपन्यास 'हम खुर्मा' और 'हम सबबाब' (1906) माना जाता है। उनकी पहली कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रत्न' (1907) मानी जाती है। उनका पहला कहानी संग्रह 'सोजे-वतन 1909' में छपा। इस संग्रह में देशप्रेम की भावुक ललकार मिलती है।

लेखन के रूप में नवाबराय नाम चुना, परंतु सरकार को यह पता चल गया। उन्हें जिलाधीश से डांट-फटकार पड़ी और भविष्य में ऐसी कहानियाँ ना लिखने की हिदायत दी और संग्रह जब्त कर लिया। फिर उन्होंने प्रेमचंद नाम से लिखना, शुरू किया। 1910 में 'बड़े घर की बेटी' पहली कहानी छपी।

प्रेमचंद के जीवन का क्वींस कॉलेज बनारस को प्रेमचंद दसवीं की परीक्षा पास की। 1899 ई. में प्रेमचंद ने सहायक अध्यापक की नौकरी करनी प्रारंभ की।

बाद में वे स्कूल इंस्पेक्टर बना दिए गए यह समय भारतीय इतिहास में महात्मा गाँधी स्थापित होने के पहले का था। गाँधी जी के असहयोग आंदोलन के समय प्रेमचंद गोरखपुर में नौकरी कर रहे थे। 8 फरवरी, 1921 को गाँधी जी इलाहाबाद पहुँचे। जनसभा को संबोधित किया। महात्मा गाँधी के अपील पर प्रेमचंद के अनुकूल प्रभाव पड़ा। उन्होंने पत्नी से सलाह कर सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया।

नौकरी छोड़ने के पश्चात वह महावीर प्रसाद पोद्दार के साथ गए चरखे का प्रचार किया। उन्होंने कई निजी संस्थानों में अध्यापकों पर टिक नहीं सके। इसी क्रम में जुलाई 1923 में बनारस में 'सरस्वती प्रेस' की स्थापना की। इसी प्रेस से बाद में प्रेमचंद ने 'हंस' और जागरण को प्रकाशित किया। जून 1916 की सरस्वती में 'पंच परमेश्वर' शीर्षक से यह कहानी प्रकाशित हुई, अब धीरे-धीरे साहित्य में आने लगे अभी तक उर्दू में लिखते थे। अब हिंदी में लिखने लगे। हिंदी ने जब 'सेवासदन' प्रकाशित हुआ। उसके बाद प्रेमचंद ने 'रंगभूमि' उपन्यास की रचना की।

डेढ़ साल बाद प्रेमचंद पुनः लखनऊ गए इस बार उन्हें प्रसिद्ध हिंदी पत्रिका 'माधुरी' का संपादक बनाया गया। प्रेमचंद के साथ कृष्ण बिहारी मिश्र थे। इसके बाद अलवर नरेश ने उन्हें अपनी

रियासत बुलाया। उन्हें 400 रुपये मासिक के साथ बंगला, मोटर, चाकर आदि का प्रस्ताव दिया, जो उन्होंने नम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया। अंग्रेज सरकार ने उन्हें 'रायसाहब' का खिताब देना चाहती थी, वह भी उन्होंने अस्वीकार कर दिया।

1927 में हिन्दुस्तानी एकेडमी का उद्घाटन हुआ। धीरे-धीरे हिंदी संसार के प्रतिष्ठित लेखक हो गए। उन्हें उपन्यास सम्राट कहा जाने लगा। इस दौरान प्रेमचंद पर दो गंभीर आरोप लगे कि 'रंगभूमि' 'वेनिटी फेयर' की नकल है और 'प्रेमाश्रम' 'रिजरेक्शन' की नकल है। उन पर ज्योतिप्रसाद निर्मल और ठाकुर श्रीनाथ सिंह ने दो आरोप लगाए कि वह ब्राह्मण विरोधी हैं, दूसरे वे घृणा के प्रचारक हैं।

जनवरी 1928 में 'माधुरी' में 'पंडित मोटेराम शास्त्री' प्रकाशित हुई। इस कहानी पर किन्हीं शास्त्री जी ने उन पर मानहानि का मुकदमा कर दिया, किंतु मुकदमा खारिज हो गया। 1931 में उन्होंने 'माधुरी' का संपादन छोड़ दिया। 8 अक्टूबर 1936 उनकी मृत्यु हो गई। उनका अंतिम उपन्यास 'मंगलसूत्र' था।

उपन्यासकार प्रेमचंद

हिंदी-उर्दू में प्रेमचंद की ख्याति एक उपन्यासकार के रूप में है। वे 'उपन्यास सम्राट' कहलाते हैं। उन्होंने उर्दू-हिंदी दोनों भाषाओं में लेखन कार्य किया। उनके प्रमुख उपन्यासों का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है-

वरदान-प्रेमचंद पर आर्य समाज का प्रभाव था, अतः उन्होंने 'जलवए ईसार' नामक उपन्यास लिखा। हिंदी में यह 'वरदान' के नाम से प्रकाशित हुआ। यह प्रेमचंद का धार्मिक-सामाजिक उपन्यास है। इसमें एक महिला अष्टभुजा देवी से प्रार्थना कर वरदान रूप में ऐसा पुत्र मांगती है, जो देश का उपकार करे। उसे प्रतापचन्द्र नामक पुत्र मिलता है, जो बाद में संन्यासी बनकर स्वामी बालाजी नाम से प्रसिद्ध होता है। इस उपन्यास से यह संदेश मिलता है कि व्यक्ति को अपने निजी सुख को छोड़कर राष्ट्र की सेवा करते रहना चाहिए।

सेवासदन-सेवासदन की रचना पहले उर्दू में 'बाजार ए हुस्न' शीर्षक से पहले उर्दू में हुई। बाद में यह 'सेवासदन' नाम से हिंदी में छपा। यह उपन्यास वेश्या समस्या पर लिखा गया था। इसकी नायिका सुमन नौकरीपेशा परिवार की लड़की है। उसके पिता ईमानदार पुलिस वाले हैं, परंतु पुत्री के विवाह के लिए दहेज की व्यवस्था करने के लिए रिश्वत लेते हैं, किंतु पकड़े जाते हैं और जेल हो जाती है। सुमन की शादी विधुर गजाधर से करनी पड़ती है।

विवाह के बाद आर्थिक तंगी तनाव कारण था, फिर जवान पत्नी पर संदेह कर एक दिन गजाधर सुमन को घर से निकाल देता है। वह पड़ोस रहने वाले वाले वकील से आश्रय मांगती है, पर आश्रय ना मिलने पर वह भोली वेश्या के घर आश्रय लेती है और वेश्या बन जाती है। शहर में वेश्याओं सुधार का आंदोलन चलता है, वही वकील उस आंदोलन का नेता होता है। इसी उथल-पुथल में गजाधर आत्मग्लानि से पीड़ित होकर संन्यासी बन जाता है। अंत में वेश्याओं के लिए एक 'सेवासदन' नामक आश्रम की स्थापना होती

है। अंत में सुमन और गजाधर मिलकर मानवता की सेवा करने लगते हैं।

'सेवासदन' में मूलतः समाज में नारी की हीन स्थिति तथा समाज की परिस्थितियों के कारण नारी को व्यभिचार की ओर धकेलने की समस्या को उठाया गया है।

'सेवासदन' की मुख्य समस्या वेश्या समस्या है, परंतु इसमें प्रेमचंद ने भारतीय परिवारों में स्त्री की स्थिति, स्त्री-पुरुष संबंधों की असमानता, दहेज प्रथा आदि परंपराओं का उजागर किया। हिंदी समाज ने उत्साहपूर्वक इस उपन्यास का स्वागत किया।

प्रेमाश्रम-यह उपन्यास किसान जीवन की समस्याओं पर आधारित है। इसकी रचना असहयोग आंदोलन के समय हुई थी। 'प्रेमाश्रम' की मूल समस्या जमींदारी समस्या है। असहयोग आंदोलन के पश्चात प्रेमचंद के नजरिये में बदलाव हो गया था। इसके बाद वह मानने लगे कि अंग्रेजी शासक किसानों के सबसे बड़े दुश्मन हैं। इस उपन्यास का नायक कोई एक पात्र नहीं है वरन् लखनपुर गाँव के सारे किसान ही नायक हैं। उपन्यास के अंत में सभी किसान खुशहाल हैं। प्रेमशंकर जमींदार से दूर हटकर किसानों के लिए 'प्रेमाश्रम' की स्थापना करता है।

रंगभूमि-यह प्रेमचंद पहला उपन्यास है, जो मूलतः हिंदी में लिखा गया। इसका रूपांतरण उर्दू में हुआ था। इसका मुख्य पात्र भिखारी सूरदास है, इसकी जमीन उद्योगपति जॉनसेवक लेना चाहता है, किंतु सूरदास राजी नहीं है। जमीन के बाद वह पाण्डेपुर की आवासीय जमीन और झोपड़ा भी लेना चाहता है। इस कारण संघर्ष होता है, आंदोलन होता है, दो दल बन जाते हैं। राजा महेंद्र प्रताप का पक्ष लेते हैं। विनय और सोफिया सूरदास का समर्थन करते हैं। अंत में सूरदास मारा जाता है। कारखाना खुल जाता है। इसके माध्यम से प्रेमचंद साम्राज्यवादी नीति को स्पष्ट करते हैं।

निर्मला-'निर्मला' उपन्यास 'चौद' पत्रिका में 1925 से 1926 तक प्रकाशित हुआ, इसमें दहेज प्रथा के कारण बेमेल विवाह की समस्या का चित्र किया गया है। यह एक पहला उपन्यास है, जिसमें स्वाधीनता का वर्णन नहीं किया गया। इसमें बेमेल विवाह के कारण युवा नारी की धीमी-धीमी हत्या होते दिखाया है। इसका अंत बहुत दुःखद है।

कायाकल्प-इसमें प्रेमचंद ने सामाजिक-राजनीतिक जीवन के साथ अलौकिक कल्पनाओं को भी चित्रित किया है। इस तरह उपन्यास के दो केंद्र हैं। पहले केंद्र में जगदीशपुर की रानी देवप्रिया का भोग-विलास है। दूसरे केंद्र में चक्रधर है, जो दोनों कहानियों को जोड़ता है। पहले भाग में धर्म और विज्ञान तथा योग तथा भोग को मिलाकर चिर यौवन प्राप्त करने की आकांक्षा है। यह प्रेमचंद का अपेक्षितः कमजोर उपन्यास है।

गबन-प्रेमचंद का यह उपन्यास सविनय अवज्ञा आंदोलन से पहले का है। इसकी शुरुआत स्त्रियों के आभूषण से प्रेम में शुरू होती है। इसका नायक रामनाथ अविचारशील मध्यम वर्गीय पात्र है। इसमें नायिका जालपा है, जिसका अंत में चरित्र परिवर्तन होता है। पहले वह आभूषण प्रिय नारी है। इस उपन्यास में पुलिस किसानों पर अत्याचार करने में जमींदारों का साथ देती थी। उपन्यास में पुलिस को अंग्रेज सरकार के प्रतिनिधि के रूप में चित्रित किया

गया है। बाद में वह एक परम राष्ट्रभक्त और क्रांतिकारी के रूप में सामने आती है और अपने व्यक्तित्व से अपने पति में भी साहस का संचार करती है। इसमें प्रेमचंद ने उस कानून को बदलने की वकालत की है, जिसमें पति की मृत्यु के बाद संपत्ति का अधिकार पत्नी को नहीं मिलता था। इसी महत्त्वपूर्ण विषय पर प्रेमचंद ने लेख और कहानियाँ भी लिखी हैं।

कर्मभूमि—इस उपन्यास में किसान जीवन और नगर में चलने वाले आंदोलन में शामिल किए गए हैं। इसमें पहले अंग्रेज सिपाही आते हैं। मुन्नी के साथ बलात्कार करते हैं, कुछ समय बाद मुन्नी उनकी हत्या कर देती है। मुन्नी को पुलिस पकड़ लेती है। मुन्नी के पक्ष में आंदोलन हो जाता है। प्रेमचंद ने इन्होंने लगान बंदी आंदोलन का चित्रण किया है व इसके साथ-साथ दलितों और अछूतों के मंदिर प्रवेश किया है व इसके साथ दलितों और अछूतों के मंदिर प्रवेश की समस्या आती है।

अमरकांत इस आंदोलन का प्रमुख पात्र है। सुखदा, मुन्नी, डॉ. शांति कुमार, सकीना आदि भी महत्त्वपूर्ण पात्र हैं। इस उपन्यास में गाँव और शहर के आंदोलन मिल जाते हैं। यह इसमें भाग लेने वाले पात्रों के कारण हो पाता है। किंतु सरकारी आंदोलन के कारण यह आंदोलन विफल हो जाता है और सरकार व आंदोलनकारियों के बीच एकता हो जाती है। प्रेमचंद के अनुसार ऐसा आंदोलन दुबारा अवश्य होना चाहिए, जिससे किसी को लाभ हो या ना हो जनता जागृत अवश्य हो गई। कला को दृष्टि से इस उपन्यास को खास उपलब्धि नहीं मिल पाई।

गोदान—यह प्रेमचंद का अंतिम उपन्यास है। इसके मुख्य पात्र होरी और धनिया हैं। होरी ढीला-ढाला दबू किसान है, तो धनिया उसकी पत्नी तेज-तरंग है। इसमें इन्होंने निडरता से किसानों के शोषण की कहानी कही है। इसमें नगर और गाँव दोनों कहानियाँ साथ-साथ चलती हैं। प्रेमचंद ने इस उपन्यास में पूरे समाज का चित्रण करने की कोशिश की है। वे इस कहानी को इस तरह सुनाते हैं, जिससे पढ़ने वाला किसानों का पक्षधर हो जाए। इसके साथ ही प्रेमचंद को अशिक्षित किसानों के भावों को भाषा में बांधना है। प्रेमचंद इसमें पूरी तरह से सफल हुए हैं। इनका लेखन और विचार निरंतर विकासमान रहे। उसमें इन्होंने लगातार परिवर्तन किए।

प्रेमचंद के उपन्यासों की सामान्य विशेषताएँ

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में अपने समय के समाज को बहुत ही बेहतरीन ढंग से प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यासों में किसानों के दर्द, स्त्रियों की स्थिति आदि का बहुत ही संजीदा वर्णन किया है। उनके उपन्यास पढ़ते समय पाठक स्वयं उस दर्द को महसूस करते हैं।

प्रेमचंद के उपन्यास आदर्श के यथार्थ की यात्रा का व्याख्यान करते हैं। उनमें तत्कालीन सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों का संतुलित वर्णन करते हैं। इतना ही नहीं मुंशी प्रेमचंद मनोविज्ञान के स्तर पर भी अपने पात्रों को मजबूत करते हैं। जमींदारी प्रथा, ग्रामीणों का शोषण, जातिगत कुत्सिकता, लैंगिक असमानता, बेमेल विवाह और उससे उत्पन्न समस्याएँ आदि ऐसे यथार्थ हैं, जो वास्तव में उस समय थे और उन्हीं का प्रकटीकरण मुंशी प्रेमचंद ने किया।

भाषा इनकी सहज और सरल है। वे भारी-भरकम शब्दों से बचते हैं और शायद यह उनकी लेखन-नीति का हिस्सा है।

मुंशी प्रेमचंद ने उपन्यास अपने समय की तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। यद्यपि प्रेमचंद के उपन्यासों में आदर्श भी महसूस किया जा सकता है। प्रेमचंद साहित्य की एक और महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि उन्होंने वही लिखा है जो कि उन्होंने देखा और भोगा। यही कारण है कि प्रेमचंद और उनका साहित्य विशेष रूप से उनके उपन्यास आज भी प्रासंगिक है।

प्रेमचंद की नजर समाज पर और सामाजिक परिवर्तन पर रहती है। प्रेमचंद समाज की विभिन्न समस्याओं का चित्रण करते हैं। उपन्यास पढ़ने के बाद हमें उस समस्या और उसके समाधान की जानकारी मिल जाती है। उनके उपन्यासों में एक से अधिक समस्याओं का चित्रण किया है, इसलिए उनकी रुचि पात्रों के निर्माण में नहीं, बल्कि इन समस्याओं के उद्घाटन में रहती है।

प्रेमचंद वास्तव अपने उपन्यासों के द्वारा शिक्षक का कार्य करते हैं, जैसे-लोगों को सही राह दिखाना, सत्य से परिचित कराना, समाज में फैली विसंगतियों से अवगत कराना।

कहानीकार प्रेमचंद

इनकी पहली कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' 1970 में प्रकाशित हुई थी। यह कहानी संग्रह 'सोजेवतन' में शामिल की गई, यह कहानी संग्रह उर्दू में छपा था तथा नवाबराय के नाम से प्रकाशित हुआ, इस संग्रह को अंग्रेजी जिलाधीश ने जब्त कर लिया और भविष्य में ऐसा कुछ ना लिखने पर पाबंदी लगा दी। उन्होंने दुबारा लिखने के विचार ने इन्होंने अपना नाम प्रेमचंद रख लिया। फिर यह देश प्रेम के स्थान पर ऐतिहासिक और सामाजिक विषयों पर लिखने लगे उन्हें साहित्य की शक्ति का एहसास हुआ, अतः लेखन की गंभीरता से लिखने की जरूरत को समझा।

इस नाम से उनकी पहली कहानी 'बड़े घर की बेटी' छपी। इन्होंने मनोरंजन प्रधान कहानियाँ नहीं लिखी, इसके बदले उन्होंने उद्देश्य परक कहानियाँ लिखी। वह कहानी को मनोरंजन का हिस्सा नहीं दुःख और पीड़ा का किस्सा कहते हैं। यह विचलन उनकी कहानियों की विशेषता है। वे कहानियों में मूल विषय पर ही केंद्रित रहते हैं। उनके अनुसार भाषा सरस होनी चाहिए, सुबोध होनी चाहिए उनकी कहानी के अंत में उपदेश या संदेश जरूर होता है, जैसे-'ईदगाह' और 'बैर का अंत' में निर्दोष बच्चों की आँखों से इस कूर सच को दिखाया है। 'मैकू' और 'शराब की दुकान' में शराब की दुकानों पर दिए गए धरने हैं। 'चकमा' में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का दृश्य दिखाया गया है।

प्रेमचंद की गिनती उन विशिष्ट लेखकों में की जाती है, जिन्होंने नियमित रूप लेखन किया। प्रेमचंद की दूसरी विशेषता यह है उनकी लेखन और शैली लगातार विकसित होती रही, हर कहानी में पिछली कहानी की कमियों को दूर करते रहे। उन्होंने स्वयं को सुख पहुँचने वाली रचनाएँ नहीं लिखीं, अपितु वे समाज में जागृति फैलाना चाहते थे। स्वाधीनता आंदोलन में सहयोग देना चाहते थे। देश को विकसित करना चाहते हो। प्रेमचंद ने शिक्षित समाज के सामने बेजुबान किसानों की पीड़ा व्यक्त की है। प्रेमचंद ने मनोरंजन प्रधान कहानियाँ नहीं लिखीं, अपितु उद्देश्यपरक कहानियाँ लिखीं।

उद्देश्य की सिद्धि के लिए उन्होंने जीवन में आने वाली सच्चाइयों का उपयोग किया, उसी का वर्णन भी किया। वे कहानी के मूल विषय पर स्थिर रहते हैं। कहानी को प्रेमचंद कई बार गल्प या आख्यायिका भी कहते हैं। एक जगह उन्होंने अंतर भी स्पष्ट किया है। वे लिखते हैं, “उपन्यास में आपकी कलम में जितनी शक्ति हो, उतना जोर दिखाइए, राजनीति पर तक कीजिए। किसी के वर्णन पर दस-बीस पेज लिख डालो, भाषा सरल होनी चाहिए।”

कहानी की भाषा सुबोध होनी चाहिए, उपन्यास को लोग पढ़ते हैं, जिनके पास रुपया है और समय है। जिनके पास धन और समय नहीं होता, उनके लिए कहानी लिखी जाती है। किस्सागो प्रेमचंद और शिक्षक प्रेमचंद दोनों मिलकर कहानीकार प्रेमचंद बनते हैं। उनकी कहानी के किस्से का अंत होते-होते उपदेश न सही संदेश जरूर होता है। बिना किसी प्रेरणा या संदेश के उनकी कहानी समाप्त नहीं होती। ‘दो बैलों की कथा’, ‘ईदगाह’, ‘पूस की रात’ आदि समाज की सड़ी-गली परंपराओं पर करारी चोट है। ‘बेटों वाली विधवा’ में नारी विरोधी कानूनों पर प्रहार किया है। उनकी कहानियाँ समाज में जागृति फैलाती हैं, वे सुधार करना चाहते हैं। किस प्रकार सिर्फ ‘सवा सेर गेहूँ’ के बदले किसान आजीवन बंधुआ मजदूर बन जाता है और उसकी मृत्यु के बाद उसका बेटा उसका काम करता है।

‘बड़े घर की बेटा’, ‘नमक का दारोगा’ जैसी कहानियाँ लिखीं। इन्होंने स्त्री की पराधीनता पर बहुत-सी कहानियाँ लिखीं। बाल विवाह विधवा विवाह जैसी सामाजिक समस्याओं पर भी लेखन किया। दलित व अछूतों के मंदिर प्रवेश का भी आंदोलन चला। इस विषय पर भी कहानी लिखी।

प्रेमचंद ने उस समय के सामाजिक-राजनीतिक आंदोलनों को ध्यान में रखकर कहानियाँ लिखीं।

नाटककार प्रेमचंद

प्रेमचंद मूलतः कहानीकार थे। उन्होंने तीन नाटकों की रचना की है—

1. ‘संग्राम’ (1942)
2. ‘कर्बला’ (1924)
3. ‘प्रेम की वेदी’ (1933)।

आलोचकों का विचार है कि उनके नाटक भी मूलतः उपन्यास य कहानी ही है, जिन्हें उन्होंने नाटक का रूप दे दिया है। उन्होंने नाटककार जैसे गार्ल्स वर्दी के तीन नाटकों का अनुवाद किया।

1. ‘हड़ताल’
2. ‘चाँदी की डिबिया’
3. ‘न्याय’।

इसके अलावा प्रेमचंद ने जार्ज बर्नार्ड शॉ के एक नाटक का अनुवाद किया। ‘सृष्टि का आरंभ’ यह उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ था।

गार्ल्स वर्दी के ये नाटक 1930 में हिन्दुस्तान एकेडमी में छपे थे। इन्होंने अपने इन नाटकों में अंग्रेजी न्याय-व्यवस्था और जेल व्यवस्था की अमानवीयता को उजागर किया था। इसके छपने के बाद इंग्लैंड की जेल व्यवस्था में सुधार किया गया। गार्ल्स वर्दी ने

‘चाँदी की डिबिया’ में दिखाया है कि वहाँ पर अमीर और गरीब में भेद किया जाता है और वह भी कानून, न्याय और सहृदयता की ओट में अपने नाटक लेखन के दौरान ही प्रेमचंद ने इन नाटकों का अनुवाद किया था।

संग्राम (1922 ई.)—उनका पहला नाटक ‘संग्राम’ है। प्रेमचंद के अनुसार यह राजनीतिक नाटक नहीं है, वरन् एक ‘सामाजिक नाटक’ है। इस नाटक के प्रमुख पात्र—हलप्पर, राजेश्वरी, सबल सिंह, ज्ञानी आदि हैं। नाटक में कुल पांच अंक हैं। नाटक के प्रारंभ में सबल सिंह हलप्पर की पत्नी राजेश्वरी के प्रति आकर्षित होती है। यह आकर्षण-विकर्षण अंत तक चलता है। सबल सिंह सच्चरित्र प्रौढ़ शादी-शुदा है। वह अपनी पत्नी ज्ञानी से प्यार करते हैं, लेकिन राजेश्वरी को देखते ही चाहने लगता है। वह छल से हलधर को जेल भिजवा देता है। राजेश्वरी उसके घर आ जाती है। प्रेम करते-करते राजेश्वरी को संपूर्ण रूप से पाना चाहता है। इसी बीच सबल सिंह का छोटा भाई भी राजेश्वरी को चाहने लगता है। इसी बीच गाँव में साधू चेतनदास आ जाता है, उसकी नजर सबल सिंह की पत्नी ज्ञानी पर है। हलधर डाकू बन जाता है, वह सबल सिंह से बदला लेना चाहता है, परंतु साधु उनको बचाने का माध्यम बनता है।

नाटक का प्रमुख पात्र कामभावना से पीड़ित है और नायिका अपने सतीत्व की रक्षा करने के लिए तत्पर रहती है, जिसमें स्त्री पात्रों के सतीत्व की रक्षा करने में सफल होता है। इसमें सभी पात्र आत्महत्या करने के लिए मानसिक रूप से तैयार हो जाते हैं, लेकिन ज्ञानी के अलावा कोई पात्र आत्महत्या नहीं करता। चेतनदास कभी अपने को सुधार लेता है। इस नाटक से यह संदेश मिलता है कि जमींदार हीन भारत में किसान खुशहाल रह सकता है।

कर्बला (1924)—यह एक ऐतिहासिक नाटक है। यह इस्लाम के इतिहास की आपसी संघर्ष की क्रूरतम घटना है। कर्बला वर्तमान में इराक के बगदाद से लगभग 100 किलोमीटर दूर एक शहर है। यहाँ पैगम्बर मोहम्मद के नाती हजरत इमाम हुसैन और खलीफा मजीद के समर्थकों के बीच युद्ध हुआ था। इसमें पांच अंकों का नाटक है। नाटक की मूल विषय-वस्तु युद्ध से संबंधित है। इतिहास और परंपरा ने जिन पात्रों को खलनायक के रूप में पहचान दी है। प्रेमचंद ने उन्हें उसी रूप में प्रस्तुत किया है। इमाम हुसैन अत्यंत दयालु, वीर और प्रभावशाली रूप में नाटक में आते हैं। इसकी प्रेमचंद ने खुलकर तारीफ की है।

प्रेम की वेदी (1933)—इस नाटक में कुल आठ दृश्य हैं। इसके प्रमुख पात्र हैं। जेनी, मिसेज गार्डन, विलियम, उमा, योगराज आदि। मिसेज गार्डन ईसाई है तथा उमा और योगराज हिन्दू हैं। जेनी बी.ए. पास है। वह स्वतंत्र विचारों की है अर्थात् वह विवाह के बंधन में नहीं पड़ना चाहती है। उसको लगता है कि विवाह करने से स्त्री पुरुष की गुलाम बन जाती है।

प्रेमचंद को लगता है कि आधुनिक शिक्षा से स्त्री स्वतंत्र हो जाती है। शिक्षित नारी मनमर्जी से चलती है। नियंत्रण से बाहर हो जाती है। परिवार से अलग हो जाती है, इसलिए वह पितृसत्ता की मर्यादा को नहीं मानती। वह सिर्फ ईसाईयों में या एग्लो-इंडियन परिवारों में ही संभव है। प्रेमचंद अपनी रचनाओं में अंतर्धार्मिक